पूर्वोत्तर में नारी दृष्टि : मेरा अनुभव

अश्विनी कुमार मौर्य
पूर्व छात्र भुड़कुडा
परास्नातक शिक्षक हिंदी
केंद्रीय विद्यालय

सितंबर २०१६ का समय था मुझे महंत रामाश्रय दास स्नातकोत्तर कॉलेज भुड़कुडा से स्नातकोत्तर की डिग्री लिए हुए तीन साल हो चुके थे। मेरा चयन केंद्रीय विद्यालय संगठन में प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिंदी के के पद पर हुआ। परिणाम आने के कुछ दिनों के बाद ही मुझे पता चला कि मुझे मणिपुर जाना है। मणिपुर पूर्वोत्तर का हिस्सा है,वही पूर्वोत्तर जिसे हम केवल भारत का एक अंग बस समझते हैं पूर्वोत्तर के ज्यादातर हिस्सों के बारे में हमें मीडिया से बहुत कम चीजें ही जानने को मिलती है। मेरे पास भी सीमित या न के बराबर ही जानकारी थी। पूर्वांचल की मिट्टी से बना गढ़ा मेरा व्यक्तित्व आम भोजपुरी भाषी जैसा ही था। हम कभी - कभी जानकारी के अभाव में पूर्वाग्रह या धारणाओं से ही काम चला लेते है। यहां आने के कि अगले दिन ही मुझे जरूरी सामानों के लिए बाजार जाना पड़ा जब मैं बाजार में पहुंचा तो वहां मैं सब्जी से लेकर हर एक दुकानों महिलाओं को देखा ।हम सबने अपने आस पास केवल पुरुषों को ही काम करते देखा है हमारी महिला शक्ति का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता है लेकिन यहां बिल्कुल उलट स्थिति देखकर मुझे अनुभव हुआ कि हम उत्तर भारतीय जो अपने को बहुत आगे समझते हमें लगता है कि हम सभ्यताओं में आगे हैं। यह पूर्वोत्तर का इलाका जो जंगल झाड़ से गिरा हुआ है वह हमारी बराबरी नहीं कर सकते लेकिन ऐसी हमारी सोच बस है। इंफाल में आपको ईमा मार्केट मिलेगी जो महिलाओं द्वारा ही संचालित होती है जो मणिपुर की महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन और निर्णय लेने की क्षमता का प्रतिबिंब है ।मेरा अनुभव रहा है कि पूर्वोत्तर में लड़के लड़कियों को समान अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं।सभी अपने क्षेत्र और पसंद का कार्य स्वयं चुन सकते है। लड़कियों के पास अवसर की कमी भी नही रहती। वे संगीत, फैशन और नृत्य को चुन सकती है। मुझे अपने बचपन की एक सहपाठी याद आती है जिसका विवाह छठी कक्षा में पढ़ते समय करवा कर उसके पिता ने कन्यादान का पुण्य प्राप्त कर लिया था। पूर्वोत्तर में अभिभावक पुत्रियों को इस काबिल बनाते है कि वे स्वयं ही अपने आर्थिक और समाजिक निर्णय ले सकें। सभी लडकियों को स्वयं का जीवनसाथी चुनने का अवसर दिया जाता है,बल्कि उनकी शादी में दिक्कत खड़ी होती है जिन्होंने स्वयं का साथी नहीं चुना है। उनका परिवार उनके इस निर्णय को सहर्ष स्वीकार भी करता है। क्या हम इस स्तर पर है? जहां हम दूसरों के निर्णय को स्वीकार सकें? मेरा अनुभव रहा कि हम दूसरों के जीवन में बहुत अधिक हस्तक्षेप करते है निर्णय तक को प्रभावित करते है। हमारे सामाजिक बंधन भी व्यक्ति के उन्नयन में बाधक होते है पूर्वोत्तर में सामाजिक संगठन बहुत मजबूत है लेकिन वे व्यक्तिगत उन्नति में बाधक नहीं होते है। विकास के पैमाने पर भले ही हमारी समझ से पूर्वोत्तर पिछड़ा हो लेकिन सभ्यता, संस्कृति और परंपरा की जो त्रिवेणी यह बहती है वह देखने योग्य है। मेरे जीवन के साथ वर्ष पूर्वोत्तर में बीते हैं मैने अनुभव किया है कि मेरी समझ में स्त्री की परिभाषा जो बदली है उसमें पूर्वोत्तर का बड़ा योगदान रहा है।

जो लोग अभी तक पूर्वोत्तर नहीं गए है है मै उनसे कहना चाहूंगा कि 'जैहा जरूर राजा कभी तू पुरुब के देशवा'।

***